International Journal of Sanskrit Research 2025; 11(2): 28-30

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2025; 11(2): 28-30
© 2025 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-12-2024
Accepted: 25-01-2025

शान्ता कुमारी मेनारिया
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
शान्ता कुमारी मेनारिया
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान, भारत

पुराणों में यम गीताएँ

शान्ता कुमारी मेनारिया

प्रस्तावना
गीता
गीता में उपनिषदों का सार निहित है कहा गया –

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधिर भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।[1]

अर्थात् जितने उपनिषद् है वे मानों गौ है श्रीकृष्ण दूध दोहने वाले है, बुद्धिमान अर्जुन भोक्ता है और दुआ हुआ दूध मधुर गीतामृत है।

गीताओं में भगवान् के भिन्न–भिन्न स्वरूपों की स्तुतियाँ की गई अतः कहा गया।

'गीयते स्तुयते यः स गीता।[2]

वेदव्यास जी ने महाभारत में लिखा –

गीता सुगीता कर्त्तव्या, किमन्यैः शास्त्र विस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य, मुख–पद्माद्–विनिः सृता।।[3]

गीता सुगीता करने योग्य है अर्थात् श्रीमद्भगवद् गीता को पढ़कर भावसहित अन्तकरण में धारण करना कर्त्तव्य है जो भगवान पद्मनाभ (श्रीविष्णु) के मुखारबिन्द से निकली है।
'यम गीता' नाम से पुराण – वाङ्मय में कई गीताएँ मिलती है। विष्णु पुराण, अग्नि पुराण व नरसिम्हा पुराण में यम गीता है।

यम गीता (विष्णु पुराण)
यम गीता विष्णु पुराण के तृतीय अंश का सातवाँ अध्याय है। यम के दूत किन–किन मनुष्यों से दूर रहते है। यह इस गीता में बताया गया है। यह गीता महर्षि श्री पराशर ने महर्षि श्री मैत्रेय को सुनाई। महर्षि श्री मैत्रेय महर्षि श्री पराशर से पूछते है कि सभी जीव आयु के समाप्त होते ही यमराज के वशीभूत होकर नरक भोगते है। ऐसा कौनसा उपाय है जिसे करने से मनुष्य यमराज के वशीभूत नहीं होते।
श्रीपराशर जी ने कहा यही प्रश्न नकुल ने भीष्म पितामह से पूछा तब भीष्म पितामह ने कहा –
कलिंग देश में ब्रह्मण था उसने यम व उनके दूतों के बीच जो बाते हुई वे बाते भीष्म जी को बताई।
''जो अहिंसा का पालन का पालन करते है किसी का धन नहीं चुराते नित्य भगवान का स्मरण करते उन्हें हरि का भक्त समझो उन्हें मेरे पास मत लाना।
यम ने यमदूतों से कहा जो विष्णु भक्त है उन्हें दूर से ही परित्याग करना तब यमदूतों ने यम से कहा श्रीहरि (विष्णु) का भक्त कैसा होता है। तब यम ने कहा –

कनकमपि रहस्यवेक्ष्य बुद्धया तृणमिव यः समवैति वै परस्वम्।
भवति च भगवत्यनचेताः पुरुषवरं तमवेहि विष्णुभक्तम्।।[4]

जो व्यक्ति एकान्त में पड़े हुए सोने को बुद्धि के द्वारा तिनके के समान समझता है और जो भगवान का नित्य चिन्तन करता है उसे विष्णु का भक्त समझो।

हरति परधनं निहन्ति निहन्ति जन्तून्
वदति तथाऽनृतनिष्ठुराणि यश्च।
अशुभजनित दुर्मदस्य
कलुषमतेर्हृदि तस्य नास्त्यनन्तः।।[5]

जो पुरुष दूसरों का धन चुराता है, जीवों की हिंसा करता है मिथ्या व कटुभाषण करता है, उस दुष्टबुद्धि के हृदय में भगवान निवास नहीं करते। उन्हें मेरे पास लाना।

सकलमिदमहं च वासुदेवः
परमपुमान् परमेश्वरः स एकः।
इति मतिरचला भवत्यनन्ते
हृदयगते व्रज तान्विहाय दूरात्।।[6]

अर्थात् जो यह अनुभव करता कि यह सम्पूर्ण विश्व व परमेश्वर वासुदेवात्मक होने के कारण एक ही है, जिसकी बुद्धि अचल है, जो हृदय में भगवान का स्मरण करता है उसको दूर से परित्याग करना अर्थात् उन्हें मेरे पास मत लाना।
कलिङ्ग ब्राह्मण ने यम व यमदूतों के बीच जो बाते हुए बताई।
इस प्रकार यह गीता श्री पराशर जी ने श्री मैत्रेय जी को सुनाई।
अतः विष्णु भक्त सम्पूर्ण संसार को समान भाव से देखता है, सबका कल्याण चाहता है, जिस कारण वह यमपाश से मुक्त हो जाता है।

यमगीता (अग्निपराण)

अग्नि पुराण का 382 अध्याय यम गीता है। इसका केन्द्रिय विषय योग दर्शन है। यह गीता अग्निदेव द्वारा वसिष्ठ के प्रति कही गयी। अग्निदेव ने वसिष्ठ से कहा अब में यम गीता का वर्णन कर रहा हूँ जिसका उपदेश यमराज ने नचिकेता को दिया। यम नचिकेता का संवाद कठोपनिषद में भी है।
यमराज ने कहा – मनुष्य सांसारिक सुखों को ही स्थिर मानता है।[7] कपिल जी ने ''मनुष्यों के कल्याण का मार्ग भोगों में आसक्ति का अभाव व आत्मतत्व का चिन्तन है।''[8] आचार्य पंचशिख ने ''सर्वत्र समतापूर्ण दृष्टि व ममता व आसक्ति का न होना कल्याण का मार्ग बताया।[9]
गंगा विष्णु ने मनुष्य की सभी अवस्थाओं को समझना कल्याण का मार्ग बताया।''[10]
महाराज जनक ने ''आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक दुख को क्षणिक समझना ही मनुष्यों के कल्याण का साधन बताया है।''[11]
ब्रह्मजी का मत है जीवात्मा व परमात्मा को एक मानना परमकल्याण का हेतु है।[12]
जैगीषव्य का कहना है कि ''ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद में जो कर्म है उन कर्मो को करना श्रेय का साधन है।[13]
देवल का मत है सभी प्रकार की आकांक्षाओं का त्याग करना ही मनुष्यों के लिए कल्याणकारी है।''[14]
सनकादिकों का मत है कि ''कामनाओं के त्याग से विज्ञान, सुख ब्रह्म एवं परम पद की प्राप्ति होती है।[15]
जो भगवान का चिन्तन करते हुए प्राणों को त्यागता है वह भगवान को प्राप्त कर लेता है।
आत्मा को रथी, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि, मन को लगाम, इन्द्रियों को घोड़ा विषयों को मार्ग, शरीर इन्द्रिय व मनसहित आत्मा को भोक्ता कहा गया है।[16]
जो मनुष्य ज्ञान रूपी सारथी से मन रूपी लगाम को वंश में कर लेता है वह संसार को पार होकर भगवान विष्णु के परम पद को प्राप्त कर लेता है।
(यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) इन 8 साधनों से ब्रह्म और आत्मा को एक जानकर मनुष्य सत्यस्वरूप ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।
जिस प्रकार घडे को नाश होने पर घटाक अभिन्न हो जाता है उसी प्रकार मुक्त जीव ब्रह्म के साथ एकीभाव को प्राप्त होता है।[17]
अग्निदेव ने कहा – हे वसिष्ठ यह मैंने यम गीता बतायी। जिसे पढ़ने से भोग व मोक्ष की प्राप्ति होती है।

नरसिंह पुराण (यम गीता)

नरसिंह पुराण का आठवाँ अध्याय यम गीता है। यह गीता यमराज द्वारा मृत्यु और दूतों को समझाते हुए उन्हें वैष्णवों के पास जाने से रोकना, उनके मुँह से श्रीहरि के नाम की महिमा सुनकर नरकस्थ जीवों का भगवान को नमस्कार करके श्रीविष्णु के धाम में जाने का वर्णन है।
श्रीव्यास जी बोले– विष्णुदूतों के द्वारा अत्यन्त पीड़ित हुए मृत्युदेव और यमदूत अपने राजा यम के भवन जाकर बोले – राजन् हम आपकी आज्ञानुसार भृगु के पौत्र मार्कण्डेय के समीप गये वे ध्यान कर रहे थे तभी बहुत–से महाकाय पुरुष मूसल से हमें मारने लगे।

तद्ववीहि महाभाग यद्रह्म ब्राह्मणस्य तु।
देवं कं ध्यायते विप्र के वा ते यैर्हता वयम्।।[18]

वह (मार्कण्डेय) किस देवता का ध्यान कर रहे थे व जिन लोगों ने हमें मारा वे कौन थे?
यम ने कहा – मार्कण्डेय आज के दिन मृत्यु को जानकर भृगु जी के बतलाए मार्ग के अनुसार तपोवन जाकर भगवान विष्णु के द्वादशाक्षर मंत्र का जाप करते हुए तपस्या करने लगे।
वे पुरुष जिन्होंने तुम्हे मारा वे विष्णु के दूत है आज से जहा वैष्णव (भगवान नृसिंह के उपासक) हो वहाँ मत जाना।

न चित्रं ताडनं तत्र अहं मन्ये महात्मभिः।
भवतां जीवन चित्रं यक्षैर्दत्तं कृपालुभिः।।[19]

उन महात्माओं के द्वारा तुम्हें मारा जाना आश्चर्य की बात नहीं है। आश्चर्य तो यह है कि उन दयालु पुरुषों ने तुम्हें जीवित कैसे रहने दिया।
यम ने ऐसा कहकर नरक में पड़े पीड़ित मनुष्यों को देखा ओर उन जीवों से कहा– तुमने भगवान केशव की पूजा क्यों नहीं की? पूजन–सामग्री न मिलने पर केवल जल से भी पूजा करने पर भगवान अपना लोक दे देते है, उनकी पूजा तुमने क्यों नहीं?
यम ने अपने किंकरों से पुनः कहा – 'किंकरो। भगवान् विष्णु ने नारद जी से जैसा कहा व अन्य वैष्णवों तथा सिद्धों से जैसा सुना वह कह रहा हू सुनो– भगवान कहते है –

हे कृष्ण कृष्ण कृष्णेति यो मां स्मरति नित्यशः।
जलं भित्वा यथा पद्मं नरकादुद्धराम्यहम्।।[20]

जो 'हे कृष्ण ! कृष्ण ! कृष्ण।' इस प्रकार नित्य मेरा स्मरण करता है, उसको मैं उसी प्रकार नरक से निकाल लेता हूँ, जैसे जल को भेदकर कमल बाहर निकल आता है।
यमराज के ऐसा कहने पर नरक में पड़े हुए जीव–कृष्ण ! कृष्ण ! नरसिंह ! का कीर्तन करने लगे व बोले –

'ऊँ नमो भगवते तस्मै केशवाय महात्मने।
यत्रामकीर्तनात् सधो नरकाग्रिः प्रशाम्यति।।[21]

'ऊँ' जिनका नाम की कीर्तन करने से नरक की ज्वाला शान्त हो गयी, उन भगवान् केशव को बारम्बार प्रणाम है आप हमें इस दुर्गन्धपूर्ण नरक से हमारा उद्धार करें।

इस प्रकार नरक में पड़े जीवों द्वारा भगवान विष्णु का कीर्तन करने पर उन जीवों की नरक–पीड़ा तत्काल दूर हो गई। फिर भगवान् विष्णु के किंकर यमदूतों की भर्त्सना करने उन्हें दिव्य विमानों पर बिठाकर विष्णुधाम लेकर गये।

यमराज ने विष्णु भगवान को प्रणाम किया व बोले –

यत्रामकीर्तनाद्याता नारकाः केशवालयम्।
तं नमामि सदा देवं नरसिंहमहं गुरुम्।।[22]

जिनके नाम कीर्तन से नरक में पड़े जीव विष्णुधाम को चले गये। उन नरसिंह–भगवान को में बार–बार प्रणाम करता हूँ।

संदर्भ सूची

1. सरल गीता, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2080 (श्लोकार्थ सहित) चौदहवाँ पुनर्मुद्रण, पृ. 8
2. गीता संग्रह, गीता प्रेस गोरखपुर, सं. 2078, नवाँ पुनर्मुद्रण, पृ. 4
3. सरल गीता, गीताप्रेस गोरखपुर, गीता महात्म्य, श्लोक 4
4. अनुवादक श्रीमुनि लाल गुप्त, विष्णुपुराण, गीता प्रेस गोरखपुर, सं. 2080, पैसठवाँ पुनर्मुद्रण, 7.22
5. वही 7.28
6. वही, 7.32
7. आचार्य शिव प्रसाद द्विवेदी, अग्निपुराण, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, पुनर्मुद्रित संस्करण 2014, 382.2
8. वही, 382.3
9. वही 382.4
10. वही 382. 4–5
11. वही 382.6
12. वही 382.7
13. वही 382.8
14. वही 382.9
15. वही 382.10
16. वही 382.21–22
17. वही, 382.35
18. श्री नरसिंह पुराण, गीताप्रेस गोरखपुर, सं. 2075, चौदहवाँ पुनर्मुद्रण, 8.7
19. वही 8.16
20. वही 8.27
21. वही 8.32
22. वही 8.44